

• कक्षा में व्यक्त व्यक्तियों का निरीक्षण एवं अभिलेखन :-

(a) इस कार्य के लिए निरीक्षण कर्ता के लिए निम्न मात्रे का ध्यान रखना चाहिए।

संकेत वाले निरीक्षण कर्ता के एवं ऐसे स्थान का चुनाव चालित करना व संपूर्ण कक्षा गतिविधियों को अच्छी तरह इस सुन कर अपना निरीक्षण कार्य इस प्रकार कर सके कि उनकी उपस्थिति से कक्षा की गतिविधियों के स्वायत्त रूप से चलाने से कार्य बाध न पड़े।

(b) भ्रूरीगव्याकर्ता के विभिन्न वेधियों में संभावित व्यवहारों का मान होना चाहिए।

(c) निश्चित अवधि के भीतर व्यक्त व्यवहारों की लंबी के ऋणक की व्यक्त होने के तहत बात ही अलैव पर अंकित करते जाना चाहिए।

(d) रनकोडिंग की किथा बहुत शीघ्रता से संगठन की जाती है एक मिनट में 2 और 25 निरीक्षण का आंकन निरीक्षण कर्ता को ऐसे भ्रूलैखन ल में करना होता है।

(e) निरीक्षणकर्ता को अट धी ध्यान रखना चाहिए की इन त्रैणी क्रमाकी का आंकमन

एक ही कॉलम में एक के लिए एक के क्रम को जिस तरह व्युत्क्रमित कर दिया है वैसे ही अंकित करने का प्रयत्न करें।

(f) अब यह निश्चित करने में सीनरम का अनुभव से कि ग्रैय सा निश्चित रूप से उन ग्रैणी के अंतर्गत आना चाहिए तो एक व्यवहार को एक ग्रैणी से अधिक दूर की ग्रैणियों को अंकित करना चाहिए।

(g) यदि 3 सेकण्ड की अवधि से अधिक समय इस रहना तो व्यवहार ग्रैणी क्रमांक (.) अंकित किया जाना चाहिए।

(2) अंतः क्रिया मैट्रिक्स की स्पना:-

अभिलेखन सा इन कोटिंग का कार्य करने के बाद निरीक्षण कर्ता को प्राप्त ग्रैणी क्रमांक के द्वारा एक अंतः क्रिया मैट्रिक्स की स्पना का कार्य करना होता है इस मैट्रिक्स रचना में इस पंक्तियों तथा इस स्तंभ होने हैं कॉलेज पर के सभी ग्रैणी क्रमांक को मैट्रिक्स में अंकित किया जाता है प्रत्येक ग्रैणी क्रमांक से अधिक गाम के रूप में अंकित किया जाता है। इस रूप में इसे दो-चार गाम जानने के सम में किया जाता है।

इस कार्य को संभव बनाने के लिए मैट्रिक्स बनाने

के पूर्व आयकैल धन के प्रारंभ और अंत दोनों में ही 19 अंक अंकित किया जाता है ताकि प्रारंभ और अंत के शुभम करार जा सकें।

मैट्रिक्स की पंक्तियाँ युग्म के पहले क्रमांक को दर्शाती हैं जबकि स्तम्भ इनके दूसरे क्रमांक को दर्शाते हैं।

* मैट्रिक्स बनाने की प्रक्रिया का उदाहरण :-

आना की निरीक्षण से आरेख पर श्रेणी क्रमांक 5, 4, 3, 1, 5, 2, 5, 1, 7, 2 का अंकन किया इस अवलोकन क्रम से पहले और नए में 19 अंकित करना है और फिर मुद्रम बनाना कार्य शुरू किया जाता है तो यह 22 का शुभम बनाया जाता है।

इस प्रकार करते हुए युग्मों को मैट्रिक्स में अंकित किया जाता है।

* मैट्रिक्स तालिका के अंकन की व्याख्या :-

प्रथम सम युग्म 12, 5 के लिए दनक पंक्ति तथा पाँचवें स्तम्भ को मिलाने वाले कोष में आवृत्ति अंकित की गई है इसी प्रकार से युग्मों की टर्न किया जाता है वही तरह के युग्मों की आवृत्ति अंकित है। इस प्रकार के कामों की आवश्यकता अंकित की गई है।

मेंद्रिक्स की रचना की या नहीं इसकी मान डलने के लिए यह यश उसकी होना कि ररररररर और इनको उपभोक्ता के अलग-अलग भोग का कुन योग का मायना करने के लिए शक ही थी।

भूमिकाओं का तुज योन श्रीणी भूमिका की कुल संकल दूर्णनों 10 अनररररर सहर को खरुम होगी। इस अवस्था में प्राथः कुल 12 श्रीणी क्रमांक हैं अतः गतिविरधियों का शोम 12-1-22 होना चाहिर, जो यही हैं अतः मेंद्रिक्स की रचना ठीक है।

इस कार्य के डिकोरिंग भी कम जाता है इसके द्वारा अतः इस मेंद्रिक्स की रचना करके निरक्षिक व्यवहार तथा कक्षा अतः क्रिया का विवलेषण के जो यक्ष होते हैं संख्यात्मक या परिमाणत्मक और मुख्यात्मक।

शिक्षक व्यवहार का विद्यात्मक विश्लेषण :-

इस प्रकार के विश्लेषण के लिए निम्नील्लिखित चार विधियाँ प्रयोग की जा सकती हैं :-

- 1) अंतः क्रियशः श्रेणी विधि ।
- 2) इस प्रिम्ज क्षेत्र विधि ।
- 3) वड्डमस - अनुपात विधि ।
- 4) अंत क्रिया चर विधि ।

उपर्युक्त विधियों में सबको अर्द्धी व महत्त्वपूर्ण विधि व्यवहार - अनुपात विधि मानी जाती है जिसका वर्णन इस प्रकार से है -

★ व्यवहार - अनुपात विधि :-

अंत क्रिया में द्यटित विधिका व्यवहारों के पारंपरिक तुलना के संदर्भ में यह अनुमान निम्नाने किरण जाते हैं अतः क्रिया मेंद्रिकस के कोर्स में जो आवृत्तियों के सूचक श्रेणी है इन्ही आवृत्तियों से प्रतिगत अनुपात ज्ञात किरण जाने हैं शिक्षक का व्यवहार शिक्षण के दौरान कैसा रहा है। इसका विश्लेषण करने में यह अनुवाद में सहायक भिक्का होते हैं।

1) शिक्षक कर्ता अनुपात :-

इस शिक्षण में शिक्षक वर्ग की कितनी सीत तक योजनाओं योगदान रहा अथवा शिक्षक का अंत क्रिया में मिलता वर्चस्व सा इसकी पश्चात के संदर्भ में शिक्षक मिच्छान अथवा शिक्षक अर्ता अनुपात को कामों के लिए निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया जाता है।

$$ITR = \frac{(1+2+3+4+5+6+7)}{N} \times 100$$

2) अप्रत्यक्ष शिक्षक वर्ता अनुपात :-

इस अनुपात में स्वतंत्र के लिए प्रोत्साहित करने वाले शिक्षक व्यवहारों को अप्रत्यक्ष कर्ता में रखा जाता है इन व्यवहारों का सम्पूर्ण शिक्षक व्यवहारों में संदर्भ में क्या प्रविधान रहा है इसकी सूचना अप्रत्यक्ष वर्ता से मिलती है।

इसकी सूचना का सूत्र -

$$ITR - \frac{(1+2+3+4)}{N} \times 100$$

3) प्रत्यक्ष शिक्षक वार्ता अनुपात :-

कक्षा में छात्र सहयोग में अध्यापक डालने वाले वह निकतासहित करने वाले शिक्षक व्यवहार की अपेक्षा स्थिति का बोध कराने के लिए इस अनुपात का प्रयोग किया जाता है।

इसकी डालना का सूत्र :-

$$DTR = \frac{(5 + 6 + 7)}{N} \times 100$$

4) छात्र वार्ता अनुपात :-

इसके अंतर्गत मैट्रिक्स में पक्ष त्रिभुजों की आवृत्तियों छात्र वार्ता से स्पष्ट संबंध रखती हैं तथा इस अनुपात को आसान करने के लिए निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया जाता है

$$PTR = \frac{(8 \times 9)}{N} \times 100$$

5) मौन या अनन्तव्यस्तता अनुपात :-

यह अप्रयुक्त छात्र शिक्षक में व्याप्त मौन या अनन्तव्यस्तता के वातावरण की ओर संकेत करता है। इसकी संरचना के लिए सूत्र है

$$SCR = \frac{(10) \times 9}{N} \times 100$$

निष्कर्ष :-

आप हम प्रयुक्त सुझते हैं कि प्लेन का अंतः क्रिया विभव अथ बहुत ही महत्वपूर्ण है इनके ग्रंथ शिक्षक या अध्यापकों के व्यवहार का अनुपात ज्ञात किया जा सकता था, इसमें यथा वह निर्धारित किया जा सकता है कि अध्यापक का व्यवहार कितना शिक्षण तार्ता के जम्बू था।

वह सिद्धन्स शिक्षक कार्य को स्यायी बनाने में सहायता करता है और इसका ज्ञान होना छात्र अध्यापकों के लिये बहुत जरूरी है।

निरीक्षण क्रम

सुग्म बनाता

सुग्म

1.	10	10-8
2.	8	2-1
3.	1	1-4
4.	9	8-2
5.	3	8-10
6.	10	10-6
7.	6	8-4
8.	14	8-2
9.	15	2-7
10.	2	3-7
11.	7	2-1
12.	8	4-3
13.	9	4-9
14.	1	9-3
15.	1	8-9
16.	5	3-8
17.	10	3-9

शिक्षक कर्ता :-

$$IJA \quad \frac{1+2+3+4+5+6+7+8}{2} \times 100$$

$$\frac{(1 \times 2 \times 3 + 4 \times 5 \times 6 \times 7 \times 8)}{N} \times 100 = \frac{2}{10} \times 100$$

क्षेत्रीकर्ता अनुभव :-

$$\frac{(8+9)}{N} \times 100$$

$$\frac{(1+2)}{N} \times 100 = 11.69 N\%$$

3) मौन :-

$$\frac{2}{47} \times 100 = 11.76\%$$